Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 3

आधुनिक भारत एवं विश्व का इतिहास

SIERRA
INNOVATIONS

भाग-3

आधुनिक भारत और विश्व का इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	**ब्रिटिश नीतियां और महत्वपूर्ण घटनाएं (18वीं शताब्दी के मध्य तक वर्तमान तक)** • आधुनिक भारत के इतिहास की समयरेखा • ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा: • भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियो की स्थापना • भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताए • बंगाल • प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.) • बक्सर का युद्ध (अक्टूबर 1764) • बंगाल में द्वैध शासन • भारत में ब्रिटिश अधिनियम • 1857 का विद्रोह	1
2.	**1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम-1858 • भारत परिषद अधिनियम 1861 • तीन दिल्ली दरबार • सिविल सेवा में परिवर्तन • सेना में परिवर्तन • रियासतों के साथ संबंध • श्रम कानून • भारत परिषद् अधिनियम 1892	18
3.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण: 1885-1905)** • देश का एकीकरण • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना • उदारवादी चरण (1885-1905)	23
4.	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग /चरमपंथी चरण (1905-1909)** • चरमपंथियों के उदय के कारण • बंगाल का विभाजन • विभाजन विरोधी आंदोलन • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों में जन भागीदारी • स्वदेशी आंदोलन का पतन • चरमपंथियों का विश्लेषण • नरमपंथियों और उग्रवादियों के बीच अंतर • ऑल इंडिया मुस्लिम लीग • कांग्रेस का सूरत विभाजन (1907) • 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार / 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम • उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास • विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां	30

	• होम रूल लीग आंदोलन • कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916) • मोंटेग्यू का अगस्त 1917 का वक्तव्य	
5.	**जन आंदोलन: गांधीवादी युग (1917-1925)** • गांधी का प्रारंभिक जीवन • महात्मा गांधी का भारत आगमन • मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और भारत सरकार अधिनियम, 1919 • रॉलेट एक्ट (1919) • खिलाफत आंदोलन	**46**
6.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925-1939)** • कांग्रेस-खिलाफत स्वराज्य पार्टी या स्वराज पार्टी • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान • साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (1927) • मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (1927) • नेहरू रिपोर्ट (1928) • कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1928) • 1929 के दौरान राजनीतिक गतिविधि • इरविन की घोषणा (31 अक्टूबर, 1929) • दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर 1929) • कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) • सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) • दांडी मार्च (12 मार्च -6 अप्रैल, 1930) • गांधी-इरविन समझौता (1931) • कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931) • गोलमेज सम्मेलन • सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से शुरू • सांप्रदायिक पुरस्कार • पूना पैक्ट • हरिजनों के लिए और अस्पृश्यता के खिलाफ गांधी का अभियान • गांधीजी और अम्बेडकर- वैचारिक समानताएं और मतभेद • भारत सरकार अधिनियम, 1935 • 1937 के प्रांतीय चुनाव • कांग्रेस के हरिपुरा और त्रिपुरी अधिवेशन • द्वितीय विश्व युद्ध (1939) • कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940) • सुभाष चंद्र बोस	**57**
7.	**स्वतंत्रता की ओर (1940-1947)** • मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (1940) • अगस्त प्रस्ताव (1940) • व्यक्तिगत सत्याग्रह (1941) • द क्रिप्स मिशन (1942) • भारत छोड़ो आंदोलन (1942) • 1943 का बंगाल अकाल • राजगोपालाचारी फॉर्मूला (1944) • देसाई-लियाकत समझौता (1945) • वेवेल योजना (1945) • सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) • भारतीय राष्ट्रीय सेना का उदय • आम चुनाव (1945-46) • 1945-46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये • कैबिनेट मिशन (1946)	**77**

	• भारत में साम्प्रदायिकता • भारत में सांप्रदायिकता के विकास के कारण • संविधान सभा का गठन (1946) • क्लेमेंट एटली की घोषणा • माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) • भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम	
8.	**सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन (19वीं सदी)** • कारण • प्रमुख समाज सुधारक और उनसे सम्बंधित आन्दोलन • हिंदू सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आन्दोलन • पारसी सुधार आंदोलन • सिख सुधार आंदोलन • सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव	**95**
9.	**स्वातंत्र्योत्तर सुदृढ़ीकरण और पुनर्गठन** • स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत • सीमा आयोग • संसाधनों का विभाजन • रियासतों का एकीकरण • इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन • विलय प्रक्रिया • हैदराबाद • जूनागढ़ • कश्मीर • कांग्रेस ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया? • राज्यों का पुनर्गठन • भाषाई राज्यों के लिए आंदोलन • आजादी से पहले • आजादी के बाद • भाषाई प्रांत आयोग (या धर आयोग) • जेवीपी समिति • पहला भाषाई राज्य: आंध्र • राज्य पुनर्गठन आयोग (एसआरसी) या फजल अली आयोग • राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 • 1956 के बाद बने नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश • बॉम्बे राज्य का विभाजन: (महाराष्ट्र और गुजरात) • फ्रांस और पुर्तगाली से क्षेत्र • दादरा और नगर हवेली • गोवा, दमन और दीव • पुदुचेरी • नागालैंड का गठन • शाह आयोग और हरियाणा, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश का गठन • मणिपुर, त्रिपुरा और मेघालय • सिक्किम • मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और गोवा • छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड • तेलंगाना	**113**

10.	**नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास**
	• परमाणु ऊर्जा समृद्धि हेतु कार्यक्रम
	  ○ परमाणु ऊर्जा आयोग
	  ○ परमाणु विभाग
		124

	○ रिएक्टर अप्सरा • भारत अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में • स्थापित किये गए विभिन्न शोध संस्थान व उपक्रम ○ केन्द्रीय ग्लास एवं सेरेमिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ○ नेशनल मेटलर्जीकल लेबोरेट्री, जमशेदपुर ○ नेशनल फिजिकल लेबोरेट्री, दिल्ली ○ केन्द्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई ○ नेशनल केमिकल लेबोरेट्री, दिल्ली ○ केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मैसूर ○ सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीटयूट, लखनऊ ○ सेन्ट्रल इलेक्ट्रोकेमिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट, कराईकुडी ○ नेशनल फर्टिलाइजर लिमिटेड, नांगल ○ भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, बेंगलुरु ○ भिलाई इस्पात कारखाना ○ ओ.एन.जी.सी. ○ भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड ○ हिन्दुस्तान टेलिप्रिंटर लिमिटेड, चेन्नई	
11.	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • भारत में शिक्षा का विकास • 1857 से पहले की शिक्षा ○ 1813 का चार्टर अधिनियम ○ मैकाले का विवरण-पत्र, 1835 ○ वुड्स डिस्पैच ऑन एजुकेशन (1854) • 1857 के बाद की शिक्षा ○ हंटर कमीशन (1882-83) ○ भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 या रैले आयोग ○ सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-19) ○ हार्टोग समिति (1929) ○ बुनियादी शिक्षा की वर्धा योजना (1937) ○ शिक्षा की सार्जेंट योजना (1944) • स्थानीय शिक्षा का विकास • तकनीकी शिक्षा का विकास • शिक्षा में यूरोपीय लोगों का योगदान • शिक्षा में स्वदेशी प्रयास • शिक्षा पर ब्रिटिश नीति का मूल्यांकन ○ आधुनिक शिक्षा का नकारात्मक प्रभाव ○ आधुनिक शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव • प्रेस का विकास ○ प्रेस की सेंसरशिप अधिनियम, 1799 ○ 1823 के लाइसेंस विनियम ○ 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम ○ 1867 का पंजीकरण अधिनियम ○ 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट ○ समाचार पत्र (अपराधों के लिए उकसाना) अधिनियम, 1908 ○ भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931 ○ भारतीय राज्य (संरक्षण) अधिनियम, 1934 • राष्ट्रवादी और साहित्यिक विकास ○ भारतीय प्रेस का योगदान	**127**

विश्व का इतिहास

12.	**पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार**
	• पुनर्जागरण
	  ○ अर्थ
	• पुनर्जागरण के उदय के कारक
	  ○ सामंतवाद का पतन
	  ○ धर्मयुद्ध का प्रभाव
	  ○ चर्च के प्रभाव में कमी
	  ○ प्रगतिशील शासकों और कुलीनों का योगदान
	  ○ भौगोलिक खोज
	  ○ आर्थिक समृद्धि
	  ○ प्रिंटिंग प्रेस का अविष्कार
	  ○ क़ुस्तुंतुनिया का पतन
	• पुनर्जागरण के जन्मस्थान: इटली
	• पुनर्जागरण की विशेषताएं
	• प्रभाव
	  ○ साहित्य
	  ○ कला
	  ○ स्थापत्य
	  ○ मूर्तिकला
	  ○ चित्रकला
	  ○ ललित कला
	  ○ विज्ञान
	• पुनर्जागरण का महत्व
	• सामंतवाद
	  ○ सामंतवाद की प्रमुख विशेषताएँ
	  ○ सामंती समाज: सामाजिक संरचना
	  ○ योद्धा (नाइट)
	  ○ सामंती लॉर्ड के अधिकार और कर्तव्य
	  ○ मातहत (वसाल) का कर्तव्य
	  ○ सामंतवाद का पतन
	• धर्म सुधार आन्दोलन
	  ○ आंदोलन के निर्माणकारी तथ्य
	  ○ प्रोटेस्टेंट आन्दोलन
	• कैथोलिक धर्म सुधार आन्दोलन
	• अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और उपनिवेशवाद की शुरुआत
	• पूर्ण राजशाही का उदय
	• 95 थीसिस
		139

13.	**प्रबोधन और औद्योगिक क्रांति**
	• प्रबोधन के उदय के कारण
	• प्रबोधन के लक्षण
	  ○ कारण/तर्कवाद
	  ○ प्राकृतिक कानून / प्रकृतिवाद
	  ○ मानवतावाद
	  ○ व्यक्तिवाद
	  ○ सापेक्षवाद
		149

	• विचारकों और दार्शनिकों द्वारा निभाई गई भूमिका
	  ○ जीन-जैक्स रूसो (1712-1778)
	  ○ इमेनुअल कांट (1724-1804)
	• ज्ञानोदय और पुनर्जागरण
	  ○ समानता
	  ○ अंतर
	• प्रभाव
	• प्रबोधन के युग का अंत
	• औद्योगिक क्रान्ति
	  ○ पूर्व-औद्योगिक यूरोप की मुख्य विशेषताएं
	  ○ औद्योगिक क्रांति का उदय
	  ○ औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में क्यों हुई?
	• तकनीकी परिवर्तन
	  ○ कपड़ा उद्योग में नई प्रौद्योगिकियां
	  ○ परिवहन में नवाचार
	  ○ संचार और बैंकिंग
	  ○ कृषि क्रान्ति
	• औद्योगिक क्रांति का प्रभाव
	  ○ आर्थिक प्रभाव
	  ○ सामाजिक प्रभाव
	  ○ राजनीतिक प्रभाव
	  ○ पर्यावरणीय प्रभाव
	• जर्मनी में औद्योगिक क्रांति
	  ○ जर्मनी में औद्योगीकरण के कारण
	• संयुक्त राज्य अमेरिका में औद्योगिक क्रांति
	• जापान में औद्योगिक क्रांति
	  ○ जापानी औद्योगिक क्रांति की मुख्य विशेषताएं
	  ○ जापान में औद्योगिक क्रांति का प्रभाव
	• रूस में औद्योगिक क्रांति
	  ○ 19वीं सदी के अंत में रूस
	  ○ ज़ार अलेक्जेंडर II और सर्गेई विट्टे के सुधार
	  ○ औद्योगिक क्रांति के लाभ	

14.	**एशिया और अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद**
	• उपनिवेशवाद
	  ○ उपनिवेशवाद के चरण
	  ○ विभिन्न क्षेत्रों में उपनिवेशवाद
	  ○ उपनिवेशवाद की प्रमुख विशेषताएं
	• साम्राज्यवाद
	  ○ साम्राज्यवाद का उदय
	  ○ साम्राज्यवाद के उद्देश्य
	  ○ साम्राज्यवाद की विधियां
	  ○ साम्राज्यवाद का प्रभाव
	• नव साम्राज्यवाद
	• अमेरिका और प्रशांत देशों में साम्राज्यवाद
		164

15.	**विश्व युद्धों का प्रभाव**
	• प्रथम विश्व युद्ध)1914-1918)
	  ○ पृष्ठभूमि
	  ○ प्रथम विश्व युद्ध के कारण
		171

	• युद्ध की प्रगति ○ दो विरोधी गठबंधन उभरे ○ पेरिस शांति सम्मेलन, 1919 ○ वर्साय की संधि ○ अन्य संधियाँ • प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम ○ राजनीतिक परिणाम ○ आर्थिक परिणाम ○ सामाजिक परिणाम • राष्ट्र संघ ○ राष्ट्र संघ के प्रमुख अंग • दो विश्व युद्धों के बीच का काल ○ युद्ध की अवधि में विश्व अर्थव्यवस्था: समृद्धि और अवसाद ○ रोअरिंग ट्वेंटीज़ ○ आर्थिक विकास तीन कारकों पर आधारित था ○ मंदी का प्रभाव • सर्वसत्तावादी शासन: फासीवाद और नाज़ीवाद ○ फासीवाद की विशेषताएं ○ इटली में फासीवाद के उदय के कारण ○ फासीवाद और नाजीवाद के बीच समानता ○ फासीवाद और नाज़ीवाद के बीच अंतर • द्वितीय विश्व युद्ध • द्वितीय विश्व युद्ध के कारण ○ वर्साय की संधि ○ आर्थिक मंदी ○ तुष्टिकरण की विफलता ○ राष्ट्र संघ की विफलता ○ 1931 में जापान का सैन्यवाद ○ नाज़ीवाद का उदय ○ फासीवाद का उदय ○ अल्पसंख्यक हितों की उपेक्षा ○ चेकोस्लोवाकिया पर जर्मनी का हमला ○ तात्कालिक कारण • घटनाओं का क्रम ○ शुरुआत ○ फोनी युद्ध ○ रिबेंट्रोप पैक्ट ○ शीतकालीन युद्ध 1940 ○ फ्रांस का पतन 1940 ○ ब्रिटेन की लड़ाई 1940 ○ युद्ध का वैश्विकरण ○ ऑपरेशन बारब्रोसा ○ पर्ल हार्बर ○ जर्मन विजय का उत्क्रमण ○ परमाणु बमबारी और अंत • जर्मनी युद्ध क्यों हार गया • युद्ध के परिणाम • द्वितीय विश्व युद्ध के बाद	

	○ नई महाशक्तियां ○ उपनिवेषवाद के अंत की शुरुआत ○ यूएन का जन्म ○ शीत युद्ध की शुरुआत ○ नई आर्थिक विश्व व्यवस्था	
16.	**अमरीकी क्रांति** • विभिन्न घटनाओं की एक श्रृंखला ने अमेरिकी क्रांति का नेतृत्व किया ○ उपनिवेशों में राजनीतिक संरचना ○ सप्तवर्षीय युद्ध • प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस (द कॉन्टिनेंटल कांग्रेस) • द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस • अमेरिकी विजय के कारण • अमेरिकी क्रांति का प्रभाव • राजनीतिक प्रभाव • सामाजिक प्रभाव ○ विश्व के अन्य भागों पर प्रभाव • अमेरिकी गृहयुद्ध (1861-1865) ○ गृहयुद्ध के कारण ○ अमेरिकी गृहयुद्ध का क्रम ○ अमेरिकी गृहयुद्ध का महत्व ○ अब्राहम लिंकन की भूमिका	**191**
17.	**फ्रांसीसी क्रांति** • पृष्ठभूमि • फ्रांसीसी क्रांति के कारण ○ राजनीतिक कारक ○ सामाजिक परिस्थिति ○ दार्शनिकों और विचारकों का प्रभाव ○ तत्काल कारक • फ्रांसीसी क्रांति के चरण ○ चरण 1: 1789 की क्रांति (1789-1792) ○ चरण 2: फ्रांसीसी क्रांति का प्रारम्भ ○ चरण 3: अधिकारों की घोषणा ○ चरण 4: आतंक का शासन ○ चरण 5 - फ्रांसीसी क्रांति का अंत • फ्रांसीसी क्रांति में महिलाओं की भूमिका • फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव ○ सकारात्मक प्रभाव ○ नकारात्मक प्रभाव ○ विश्व पर फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव • नेपोलियन का युग ○ नेपोलियन का उदय ○ नेपोलियन बोनापार्ट का शासनकाल ○ नेपोलियन के सुधार ○ नेपोलियन सुधारों की कमियां ○ नेपोलियन की विदेश नीति ○ नेपोलियन के खिलाफ द्वितीय गुट (1799-1801) ○ तृतीय गुट और नेपोलियन: 1805-1807 ○ रूस के साथ युद्ध	**198**

	○ स्पेन के साथ युद्ध ○ ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध ○ रूस के खिलाफ युद्ध (1812) ○ प्रशिया के साथ युद्ध ○ नेपोलियन के खिलाफ चतुर्थ गुट • वियना की कांग्रेस (सितंबर 1814-जून 1815) • नेपोलियन का पतन ○ नेपोलियन के शासन का मूल्यांकन		

1 अध्याय

ब्रिटिश नीतियां और महत्वपूर्ण घटनाएं

आधुनिक भारत के इतिहास की समयरेखा

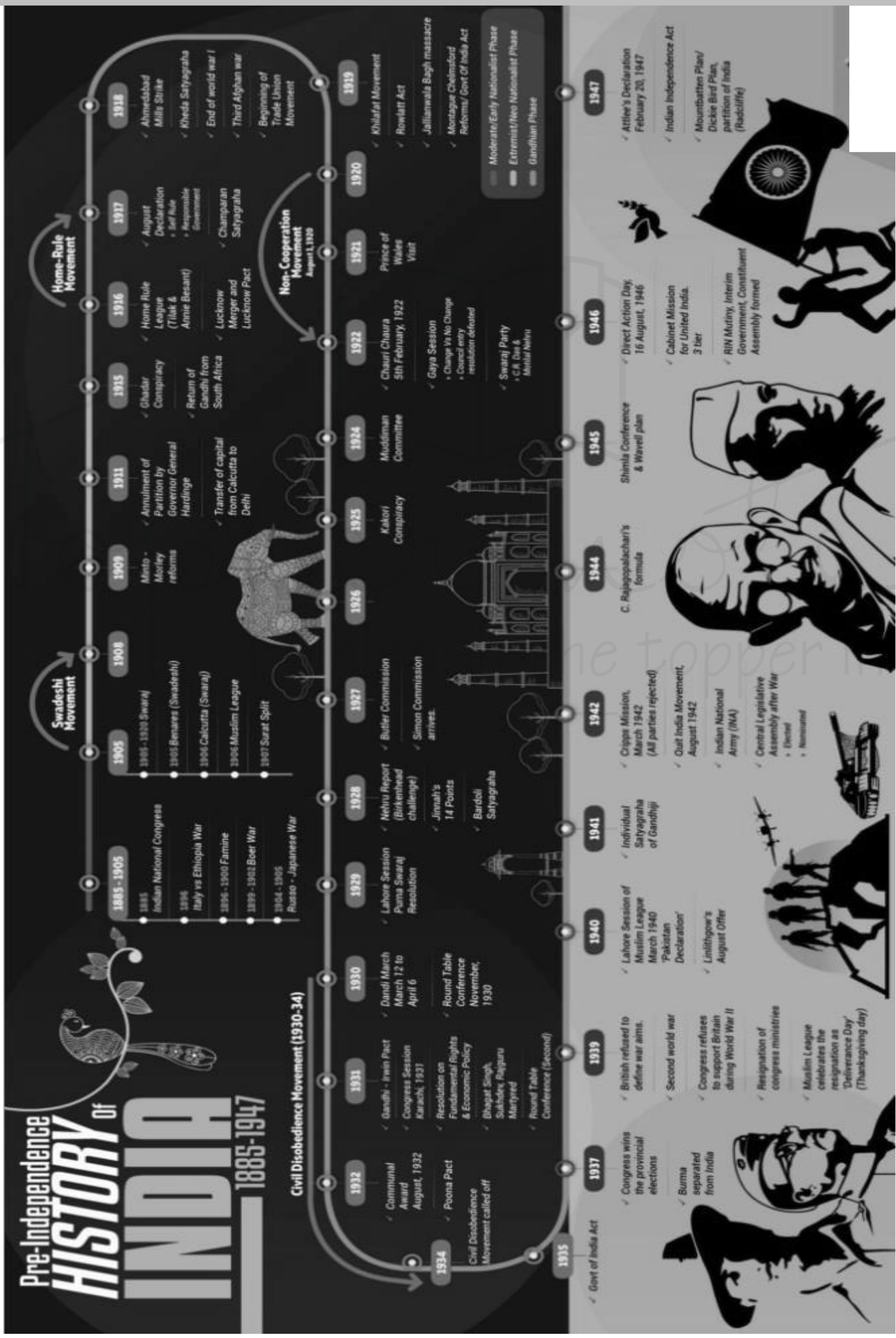

ब्रिटिश नीतियां और महत्वपूर्ण घटनाएं (18वीं शताब्दी के मध्य तक वर्तमान तक)

ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा:

- 1599 ईसवी में जॉन मिलडेन हॉल ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया
- 1599 में इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर नामक एक व्यापारिक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा दी गवर्नर एंड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना की जो बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी कहलाई ।
- 31 दिसम्बर1600 को महारानी एलिजाबेथ -1 प्रथम ने एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्षो के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र प्रदान किया और आगे जाकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-प्रथम ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया
- कंपनी का प्रारंभिक उद्देश्य भू-भाग नहीं बल्कि व्याkiपार करना था
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 में जावा ,सुमात्रा एवं मलक्का के लिए हुई

ढ़ाँचा

- एक निजी कम्पनी
- 24 सदस्यीय बार्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा संचालित जिसका सर्वोच्च अधिकारी गवर्नर था ।
- गवर्नर को युद्ध, संधि, विस्तार आदि करने का अधिकार।

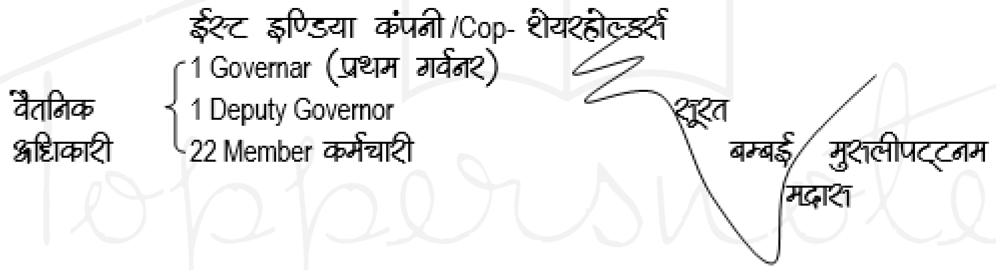

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियो की स्थापना

1609	• **हैक्टर** नामक पहला अंग्रेजी जहाज हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया • कैप्टन हॉकिन्स **सूरत** में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए • पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा
1611	• मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	• कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को हराया; • 1613 में थॉमस एल्डवर्थ के तहत सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त हुई।
1615	• जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत सर थॉमस रो, जहांगीर के दरबार में आए, फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	• गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'गोल्डन फरमान' प्राप्त किया
1662	• जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था
1687	• पश्चिमी प्रेसीडेंसी की सीट सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दी गई

दक्षिण भारत

- **दक्षिण भारत की प्रथम व्यापारिक कोठी** - 1611 में **मछली पट्टनम**। इसके बाद मद्रास में व्यापारिक कोठी की स्थापना की

पूर्वी भारत

- **पूर्वी भारत का प्रथम कारखाना** - **1633 में उड़ीसा के बालासोर में**
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना की जो निम्न हैं –
  - हरिहरपुर (बंगाल), बालासोर (उडीसा), पटना, हुगल, कासिम बाजार (बंगाल)

मद्रास

- **फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा** से मद्रास को पट्टे पर लिया जहां बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** कोठी का निर्माण किया गया

गोलकुंडा

- **गोलकुंडा के सुल्तान** के द्वारा 1632 में **"सुनहरा फरमान"** के माध्यम से गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गयी
- ईस्ट इण्डिया कंपनी की प्रथम फैक्ट्री (भारत में प्रथम) गोलकुण्डा राज्य (मुसलीपट्टनम) में स्थापित हुई ।

मुंबई

- **1661** में ब्रिटेन के **राजा चार्ल्स द्वितीय** ने पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह किया जिसमे दहेज़ के रूप में ब्रिटेन के राजा को मुंबई टापू मिल गया। चार्ल्स ने इसे 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया
- 1669 और 1677 के बीच कंपनी के **गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक मुंबई नगर की स्थापना की** और बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बम्बई को प्राप्त किया

भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताए

कंपनी की क्षेत्रीय और वाणिज्यिक महत्वाकांक्षाएं	• कंपनी ने भारत में आक्रामक व्यापारिक नीति का पालन किया।
कंपनी का बढ़ता साहस	• कमजोर शासकों का सामना करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को सशक्त बनाया। कंपनी ने बंगाल में फर्रुखसियार द्वारा दिए गए विशेषाधिकारों का दुरुपयोग किया तथा राज्यों के नियमो को तोडा।
भारतीय शक्तियों में एकता का अभाव	• क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा विस्तार के लिए लडे युद्धों ने यूरोपीय लोगों को भारतीय मामलों में दखल देने का मौका दिया।
कंपनी की गठबंधन कूटनीति	• कंपनी ने विजयदुर्ग स्थित तुलाजी आंग्रे को हराने के लिए पुर्तगालियों और बाद में पेशवा (1756) के साथ गठबंधन किया। बंगाल में कंपनी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को खरीदकर सिराजुद्दौला को अलग कर दियाऔर टीपू सुल्तान के खिलाफ युद्ध में हैदराबाद के निजामों को शामिल कर लिया।

बंगाल के संसाधन	• बंगाल की विजय (1757-65) ने भारत के अन्य क्षेत्रों को जीतने के लिए आवश्यक धन, संसाधन और सामग्री प्रदान की।
भारतीय शासकों का अपर्याप्त आधुनिकीकरण और संस्थागत कमजोरियाँ	• भारतीय राज्य कंपनी की तरह सैन्य वित्त की एक प्रणाली विकसित करने में विफल रहे। यूरोपीय भाड़े के सैनिकों पर अत्यधिक निर्भरता कुछ मामलों में घातक साबित हुई।
भारतीय शासकों से जनता का अलगाव	• भारतीय राज्यों ने अपने प्रतिरोध को जन प्रतिरोध में बदलने की कोशिश नहीं की इसलिए भारतीय किसानों को अपने शासकों से सहानुभूति नहीं थी। • मराठा, और पिंडारियो की लूटपाट के कारण वे लोगो को प्रिय नही थे।

बंगाल

- एशिया से लगभग **60% ब्रिटिश आयात** में बंगाल का माल शामिल था।
- 1700 में, मुर्शीद कुली खान बंगाल के दीवान बने और 1727 में अपनी मृत्यु तक शासन किया।
- उनके बाद **उनके** दामाद **शुजाउद्दीन** ने 1739 तक शासन किया।
- उसके बाद, एक वर्ष (1739-40) के लिए, **सरफराज खान** मुर्शिद कुली खान का एक अक्षम पुत्र, शासक बना; **अलीवर्दी खाँ ने उसकी हत्या** कर दी।
- अलीवर्दी खान ने 1756 तक शासन किया और **मुगल सम्राट को नजराना देना** भी बंद कर दिया। इन शासकों के शासन में बंगाल ने अभूतपूर्व प्रगति की।
- **अंग्रेजों के व्यापारिक हित** बंगाल सरकार तथा अंग्रेज दोनों के बीच टकराव का मुख्य कारण बन गए।
- **1757 और 1765 के बीच एक छोटी अवधि के दौरान**, सत्ता धीरे-धीरे बंगाल के नवाबों से अंग्रेजों को हस्तांतरित हो गई।

मुर्शिदकुली खाँ (1717-1727 ई.)

- इसे **औरंगजेब** द्वारा 1700 ई. में बंगाल का दीवान बनाया गया। इस समय **बंगाल का सूबेदार अजीमुशान** था। मुगल **सम्राट फर्रूखसियर** ने 1717 में **मुर्शिदकुली खाँ** को **बंगाल** का सूबेदार नियुक्त किया। इसने राजधानी ढाका से **मुर्शिदाबाद** स्थानांतरित कर दी।
- यह मुगल बादशाह द्वारा नियुक्त **बंगाल का अंतिम सूबेदार** था। इसी के साथ बंगाल में **वंशानुगत शासन** की शुरूआत हुई।
- इसने **भूमि बंदोबस्त में इजारेदारी प्रथा** शुरू की।

शुजाउद्दीन खां (1727-1739 ई.) ने 1733 ई. में **बिहार** के सूबे को बंगाल के अधीन कर किया।

सरफराज खां (1739ई.) ने **आलम-उद-दौला हैदर जंग** की उपाधि ली।

अलीवर्दी खाँ (1740 -1756 ई.)

- इसने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खी से की और कहा कि '**यदि इन्हें छेडा न जाए तो ये शहद देगी और यदि छेड़ा जाए तो काट-काट कर मार डालेगी।**'
- अलीवर्दी खां ने **सिराजुद्दौला** को अपना उत्तराधिकारी नामित किया।

सिराज-उद्-दौला (1756-57 ई.)

- **राजगद्दी के प्रतिद्वन्दी** : शौकत जंग, घसीटी बेगम, मीर जाफर
- **मनिहारी का युद्ध** (1756 ई.) में **शौकत जंग** को हराया।
- अंग्रेजो ने इस संघर्ष से लाभ उठाने के लिए नवाब के विरोधियों को शरण दी और नवाब की अनुमति के बिना ही किलेबंदी शुरू कर दी।
- अतः सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुए। कलकत्ता पर हमला किया और जून 1756ई.में **फोर्ट विलियम** पर अधिकार कर लिया। इस संदर्भ मे **ब्रिटिश अधिकारी हॉलवेल** ने **ब्लैकहोल काण्ड** का उल्लेख किया।
- **फोर्ट विलियम पर नवाब का कब्जा (जून 1756):** नवाब की सेना ने **फोर्ट विलियम पर कब्जा** कर लिया। अंग्रेजों को कलकत्ता से खदेड़ दिया गया। **9 फ़रवरी 1757 ई.** को **सिराजुद्दौला और क्लाइव के बीच** हुई अलीनगर की संधि द्वारा कंपनी के क्षेत्राधिकार और विशेषाधिकार लौटा दिए गए।

ब्लैक होल घटना (20 जून, 1756)
हॉलवेल के अनुसार, सिराजुद्दौला ने 20 जून की रात 146 अंग्रेज बंदियों को **18 फुट लंबी** एवं 1**4 फुट 10 ईंच चौड़ी** कोठरी में बन्द कर दिया था। अगले दिन जब देखा तो हालवेल सहित **23 व्यक्ति** ही जिन्दा ही बचे थे। अंग्रेज इतिहासरों ने इस घटना को **ब्लैक हाल त्रासदी** कहा है।

प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.)

- क्लाइव ने नवाब के संबंधियों और अधिकारियों जैसे **मीरजाफर**(सैन्यप्रमुख), **मणिकचंद** (कलकता का प्रभारी), **अमीनचंद** (पूंजीपति), **जगतसेठ** (बैंकर), **घसीटीबेगम** (नवाब की मौसी) आदि को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।
- प्लासी **बंगाल के नादिया जिले के भागीरथी तट पर**अवस्थित है। इस युद्ध में अंगेजी सेना का नेतृत्व **क्लाइव** ने किया।
- सिराजुद्दौला के **सैन्य प्रमुख मीर जाफर** ने लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया।
- सिराजुद्दौला पराजित हुआ, कैद कर लिया गया और बाद में मारा गया। नबाव की ओर से **मीरमदान** एवं **मोहनलाल** जैसे सैन्य अधिकारियों ने वफादारी दिखाई।
- अब **बंगाल** का नवाब मीरजाफर को बनाया गया।

प्लासी के युद्ध के कारण

- अंग्रेजों द्वारा फर्रूखसियर के **फरमानों का दुरुपयोग** करना ।
- नवाब के मना करने के बावजूद **फोर्ट विलियम की किलाबन्दी** करना एवं तोपें लगा देना ।
- नवाब के **विरोधियों को कम्पनी द्वारा संरक्षण देना** एवं गुटबाजी करना ।
- मार्च 1757 ई. में अंग्रेजों द्वारा **फ्रांसीसी बस्ती चन्द्रनगर को जीतना** (यह तात्कालिक कारण बना)
- सिराजुद्दौला के समय अंग्रेज बंगाल में कई प्रकार के दुःसाहस करते थे (जैसे दस्तक का दुरूपयोग, किलाबन्दी करना, गुटबाजी करना आदि)।

प्लासी का मैदान

- नवाब की सेना
  - मीरजाफर (सेनापति)
  - स्वयं नवाब सेना के बीच में
  - लगभग 40–50 हजार सेना
- अंग्रेज
  - लॉर्ड क्लाइव (सेनापति)
  - लगभग 2200 सेना

प्लासी के युद्ध के परिणाम

राजनीतिक परिणाम

- ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापारिक कम्पनी से राजनीतिक कम्पनी की हैसियत में आ गई । कम्पनी ने आगे बंगाल में अपनी पसन्द के कठपुतली नवाबों को बैठाना प्रारम्भ कर दिया ।
- प्लासी के बाद बंगाल में मिले मजबूती का फायदा उठाते हुए कम्पनी ने दक्षिण में फ्रांसीसियों को रोकने एवं अपना विस्तार करने का कार्य किया ।

आर्थिक परिणाम

प्लासी के बाद अंग्रेजों को काफी लाभ प्राप्त हुआ जैसे -

- मीरजाफर ने अंग्रेजों को 24 परगना की जिम्मेदारी दी ।
- कम्पनी को बंगाल में करमुक्त व्यापार का अधिकार प्राप्त हो गया ।
- दक्षिण विजयों के लिए कम्पनी को काफी धन मिला ।
- क्लाइव सहित अनेक कर्मचारियों को लाखों में घूस, रिश्वत, उपहार आदि प्राप्त हुए ।

सैनिक परिणाम

- प्लासी से कम्पनी को जो धन मिला उसका प्रयोग उसने सैनिक क्षमता बढ़ाने में किया । हिन्द महासागर के कई महत्वपूर्ण ठिकानों पर कम्पनी ने अपनी बढ़त बनाते हुए खुद को समुद्र में मजबूत बनाया ।

नवाब के रूप में मीर जाफर का काल (1757-60)

- क्लाइव के हस्तक्षेप से मीर जाफर ने परेशान होकर चिनसुरा में डचों के साथ एक साजिश रची।
- लेकिन नवंबर 1759 में बेदारा के युद्ध में अंग्रेजी सेना ने डचों को पराजित कर दिया।
- मीर जाफर के विश्वासघात और उसकी असफलता ने अंग्रेजों को नाराज कर दिया।
- फलतः कम्पनी ने 1760 ई. में मीर जाफर को गद्दी से उतारकर मीर-कासिम (जाफर का दामाद एवं सेनापति) को नया नवाब बना दिया।

नवाब के रूप में मीर कासिम (1760 - 63 ई.)

- नये नवाब ने कम्पनी को अनेक लाभ पहुँचाये । जो निम्न हैं -
  - कम्पनी को नवाब ने BMC (**बर्धमान, मिदनापुर, चंटगाँव**) की जमींदारी प्रदान की ।
  - सिंलहट् (असम) के चूने के व्यापार में कम्पनी को आधा मुनाफा दिया गया ।
  - दक्षिण विजय के लिए कम्पनी को 5 लाख रूपया दिया गया ।
  - नवाब ने यह भी कहा कि कम्पनी के मित्र तथा शत्रु उसके मित्र तथा शत्रु होंगे ।
  - इस आधार पर **वेंसिटार्ट** ने इसे **सत्ता परिवर्तन की क्रांति** की संज्ञा दी।

- अंग्रेज मीरकासिम पर भी अधिक वसूली के लिए दबाव डालने लगे। धीरे-धीरे वह अंग्रेजो की मंशा को समझ गया। अतः उसने अपनी सैन्य क्षमता एवं आय बढ़ाने का उपाय किया।
- उन्होंने राजधानी को **मुर्शिदाबाद से बिहार के मुंगेर** में स्थानांतरित कर दियाऔर अपनी सेना को **यूरोपीय पद्धति** से प्रशिक्षित करना शुरू किया।
- अंग्रेजों को दस्तक के दुरुपयोग से रोकने की कोशिश की। जब वे नहीं माने तो उसने भारतीय व्यापारियों को भी **मुक्त व्यापार** की इजाजत दे दी (यही घटना **बक्सर के युद्ध का तात्कालिक कारण** थी)। इससे अंग्रेजों के आर्थिक हितों को चोट पहुँची अतः अंग्रेजों के साथ उसका संघर्ष हुआ। अन्ततः मीरकासिम को भागकर अवध के नवाब के यहाँ शरण लेनी पड़ी।
- अतः मीरकासिम ने मुकाबला करने के लिए **अवध के नवाब शुजाउद्दौला** तथा **मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय** से सहायता माँगी। फलतः **अंग्रेजों के खिलाफ एक त्रिगुट** बना और आगे बक्सर का युद्ध हुआ।
- अब नवाब पुनः **मीरजाफर** को बनाया गया।

बक्सर का युद्ध (अक्टूबर 1764)

- मीरजाफर (1763-65) के समय **बक्सर का युद्ध** हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व **हैक्टर मुनरो** ने किया, तो दूसरी **तरफ अवध का नवाब शुजाउद्दौला** मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय एवं बंगाल का अपदस्थ नवाब **मीरकासिम** था।

त्रिगुट	अंग्रेज
मुगल बादशाह + अवध का नवाब+ बंगाल का नवाब	हेक्टर मुनरो
40-50 हजार की सेना	1027 की सेना

- दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ।
- श्रेष्ठ रणनीति+कुशल नेतृत्व एवं सैनिक क्षमता द्वारा अंग्रेजों ने जीत हासिल की।

बक्सर के युद्ध के परिणाम

- बक्सर ने अंग्रेजों की **सैनिक क्षमता की सर्वश्रेष्ठता** को स्थापित किया।
- बक्सर विजय के बाद अंग्रेजों को चुनौती देने वाली कोई मजबूत शक्ति नहीं रह गई क्योंकि इसके बाद अवध हमेशा के लिए अंग्रेजों के चंगुल में आ गया। **मुगल बादशाह** की स्थिति कमजोर और **रबर स्टाम्प** जैसी रह गयी थी।वह कम्पनी का **पेन्शनकर्ता** बन गया तथा **बंगाल का नवाब एक कठपुतली** बन गया।
- बंगाल, बिहार, उडीसा में **द्वैध शासन** स्थापित हुआ।
- बक्सर विजय के बाद अंग्रेज भारत में ही नहीं बल्कि हिन्द महासागर के महत्वपूर्ण रणनीतिक ठिकानों **(दक्षिणी-पूर्वी एशिया, मॉरीशस, मालदीव, श्रीलंका)** तथा **मिस्र एवं पश्चिम एशिया** में भी मजबूत हुए।
- बक्सर के बाद भारत में कंपनी को राज चलाने की आवश्यकता के लिए अधिकारियों की जरूरत पडी। फलतः अंग्रेज मध्यमवर्ग के लिए भारत में नौकरियों के अवसर सृजित हुए।

इलाहाबाद की संधि (12 अगस्त 1765 ई.)

1. अवध के नवाब के साथ संधि

(a) अवध के नवाब पर 50 लाख रु. युद्ध का हर्जाना लगाया गया।
(b) अवध से कम्पनी ने कड़ा तथा इलाहाबाद का जिला ले लिया।
(c) बनारस के एक जागीरदार बलवंत सिंह को अवध के नवाब से जागीर वापस करने के लिए कहा गया।
(d) कम्पनी ने बदले में **अवध को सुरक्षा की गारंटी** दी।
(e) अवध के खर्च पर उसकी राजधानी में ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी को तैनात किया गया।

कम्पनी ने अवध का प्रत्यक्ष विलय नहीं किया। कम्पनी अवध को एक मध्यवर्ती राज्य (Buffer State) के रूप में रखना चाहती थी ताकि अवध के पीछे मराठों तथा अन्य शक्तियों के हमले से खुद की रक्षा की जाये। इसे ही सुरक्षित घेरे की नीति कहा गया है।

2. मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के साथ संधि एवं शर्तें

(a) अवध के नवाब से लिये गये कड़ा एवं इलाहाबाद का क्षेत्र मुगल बादशाह को दे दिया गया।

(b) मुगल बादशाह ने कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी (भू-राजस्व वसूली का अधिकार) प्रदान की।

(c) बदले में कम्पनी ने बादशाह को 26 लाख रु. वार्षिक पेन्शन देने का वचन दिया ।

3. बंगाल के नये नवाब नजमुद्दौला के साथ संधि

नये नवाब नजमुद्दौला को बंगाल के निजामत (प्रशासन) का अधिकार दिया गया लेकिन दीवानी का अधिकार (भूराजस्व वसूली) कम्पनी ने खुद अपने पास रखा। इससे बंगाल में प्रशासन में एक **दोहरा ढ़ाँचा** उपस्थित हुआ जिसे **द्वैध शासन** कहा गया है ।

बंगाल में द्वैध शासन

- **बंगाल में द्वैध शासन** की शुरुआत कब हुई – **1765**
- बंगाल में द्वैध शासन **लागू करने का श्रेय** किसे है – **रॉबर्ट क्लाइव**

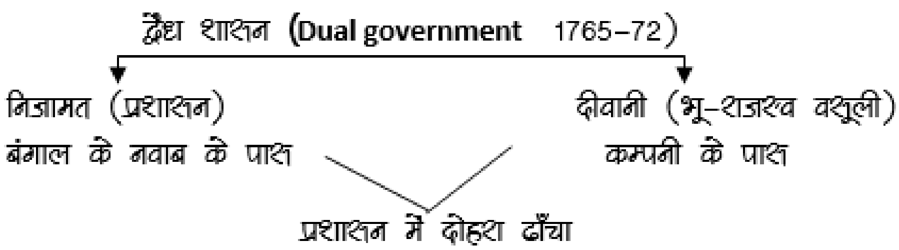

- कम्पनी को बिना दायित्व के लाभ प्राप्त हुआ ।
- निजाम को बिना लाभ के संपूर्ण दायित्व प्राप्त हो गया ।

भारत में ब्रिटिश अधिनियम

रेगुलेटिंग एक्ट –1773

- ईस्ट इंडिया कंपनी के मामलों को विनियमित करने के लिए भारत में सरकारी नियंत्रण का पहला कदम
- कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स का कार्यकाल 1 → 4 साल हो गया और ¼ हर साल सेवानिवृत्त होते थे और वे फिर से चुनाव के लिए पात्र नहीं थे।
- बम्बई और मद्रास की प्रेसीडेंसी को कलकत्ता प्रेसीडेंसी के अधीन बना दिया गया।
- बंगाल के राज्यपाल → 5 साल के लिए बंगाल के गवर्नर जनरल।
- कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना)1 मुख्य न्यायाधीश +3 न्यायाधीश (।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784

- नए कानून के अनुसार, 6 सदस्यीय बोर्ड ऑफ़ कण्ट्रोल की स्थापना - निदेशक मंडल और भारत सरकार को आवश्यक परमादर्श देना और उनकी कार्यवाहियों पर नियंत्रण रखने हेतु।
- इसके सदस्यों के रूप में इंग्लैंड के अर्थमंत्री और प्रिवी कौंसिल के सदस्यों को रखा गया
- भारत में गोपनीय आर्डर भेजने के लिए 3 सदस्यीय की एक गुप्त समिति का भी गठन हुआ।
- भारत का प्रशासन चलाने का अधिकार गवर्नर जनरल एवं उसकी तीन सदस्यों वाली कौंसिल को दिया गया।
- मद्रास और बम्बई प्रेसिडेंसी के गवर्नर को युद्ध और शांति तथा राजस्व-सम्बन्धी मामलों में पूर्णतः गवर्नर जनरल के अधीन कर दिया गया। गवर्नर जनरल अब बिना बोर्ड ऑफ़ कण्ट्रोल की सहमति के किसी भी देशी राज्य के प्रति किसी प्रकार की भी नीति)युद्ध, शांति या मैत्री (नहीं अपना सकता था।
- कम्पनी से नीति-निर्धारण का अधिकार छीन लिया गया .यद्यपि, कम्पनी पदाधिकारियों की नियुक्ति कर सकती थी एवं अपने इच्छानुसार मनचाहे अंग्रेजों को अनुग्रह प्रदान कर सकती थी, कंपनी के किसी भी अधिकारी के कार्यों से असंतुष्ट होकर उसे वापस बुला सकती थी।

चार्टर अधिनियम (1793)

- हर 20 साल में चार्टर एक्ट को नवीनीकृत करना अनिवार्य कर दिया गया)1793 में सरकार द्वारा पारित(।

चार्टर अधिनियम (1813)

- कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया।
- कंपनी के राजनीतिक एकाधिकार को बीस वर्षों के लिए बढ़ा दिया गया।
- किंतु कंपनी के चीन के साथ व्यापार व चाय के व्यापार के एकाधिकार को बीस वर्षों के लिए बढ़ा दिया गया।
- कुछ सीमाओं के अधीन सभी ब्रिटिश नागरिकों के लिए भारत के साथ व्यापार को खोल दिया गया।
- इस अधिनियम द्वारा ईसाई मिशनरियों को धर्म प्रचार की अनुमति दी गयी।
- भारतीयों की शिक्षा के लिए एक लाख रुपए प्रतिवर्ष का प्रावधान किया गया)अधोगामी निस्यंदन सिद्धांत (।
- पहली बार इस अधिनियम में ब्रिटिश अधिकार वाले क्षेत्र को परिभाषित किया गया।
- कंपनी को भारत का प्रशासक घोषित किया गया।

चार्टर अधिनियम (1833)

- इस अधिनियम द्वारा कंपनी के अधीन क्षेत्रों व भारत के उपनिवेशीकरण को वैधता प्रदान कर दी गयी।
- इस अधिनियम द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापारिक कंपनी का दर्जा समाप्त कर दिया गया और वह अब केवल प्रशासनिक निकाय मात्र रह गयी थी।
- बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल कहा जाने लगा। लॉर्ड विलियम बेंटिक को "ब्रिटिश भारत का प्रथम गवर्नर जनरल" बनाया गया।

- सपरिषद गवर्नर जनरल को कंपनी के नागरिक व सैन्य संबंधों के नियंत्रण, अधीक्षण और निर्देशित करने की शक्ति प्रदान की गयी। केंद्रीय सरकार का राजस्व वृद्धि और व्यय पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया गया। अतः सभी वित्तीय व प्रशासनिक शक्तियों का केन्द्रीकरण गवर्नर जनरल के हाथों में कर दिया गया।
- गवर्नर जनरल की परिषद् के सदस्यों की संख्या,जिसे पिट्स इंडिया एक्ट द्वारा घटाकर तीन कर दिया गया था, को पुनः बढ़ाकर चार कर दिया।

चार्टर अधिनियम (1853)

- इस अधिनियम द्वारा शासन की संसदीय प्रणाली, जैसे –कार्यपालिका व विधान परिषद , के विचार को प्रस्तुत किया गया जिसमे विधानपरिषद ब्रिटिश संसदीय मॉडल के अनुसार कार्य करती थी।
- इसने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को अनिश्चितकाल के लिए नवीनीकृत कर दिया।
- इसने नियंत्रण बोर्ड के सदस्यों की संख्या 24 से घटाकर 18 कर दी जिनमें से 6 सदस्य नामनिर्देशित होते थे।
- गवर्नर जनरल की परिषद् के चौथे सदस्य की स्थिति भी बाकी सदस्यों के समान हो गयी क्योकि उसे भी मत देने का अधिकार प्रदान कर दिया गया। बाद में शामिल किये गए छह सदस्यों को 'विधान परिषद् के सदस्य' कहा गया। अतः इस अधिनियम के लागू होने के बाद गवर्नर जनरल की सहायता छह विधान परिषद् के सदस्यों ,चार गवर्नर जनरल की परिषद् के सदस्यों और एक सेनापति द्वारा की जाती थी।
- इस अधिनियम में भारतीय सिविल सेवा के सदस्यों की नियुक्ति खुली प्रतिस्पर्धा द्वारा करने का प्रावधान भी शामिल था। मैकाले को समिति का अध्यक्ष बनाया गया ।
- इस अधिनियम द्वारा भारतीय)केंद्रीय(विधान परिषद् में सर्वप्रथम क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को प्रतिपादित किया गया।गवर्नर जनरल की परिषद् में मद्रास,बॉम्बे, बंगाल और आगरा की स्थानीय)प्रांतीय (सरकारों द्वारा छह नए विधान परिषद् के सदस्य नियुक्त किये गए।
- सर्वप्रथम इसी अधिनियम द्वारा गवर्नर जनरल की परिषद के कार्यपालिका व विधायी कार्यों को अलग किया गया।

1857 का विद्रोह

1857 के विद्रोह का महत्व

- इसने भारत में **ब्रिटिश साम्राज्य की नींव** हिला दी और एक समय तो ऐसा लग रहा था कि ब्रिटिश शासन आने वाले समय में समाप्त हो जाएगा।
- एक **सिपाही विद्रोह** के रूप में जो शुरू हुआ वह जल्द ही उत्तरी **भारत** के **व्यापक क्षेत्रों** में किसानों और अन्य नागरिक आबादी में फ़ैल गया।
- यह उभार इतना व्यापक था कि कुछ समकालीन पर्यवेक्षकों ने इसे - **राष्ट्रीय आंदोलन की पहली लड़ाई** कहा।

1857 के विद्रोह के कारण

राजनीतिक प्रशासनिक कारण

- **रियासतों का असंतोष** -अंग्रेजो का प्रभुत्व रियासतों के ऊपर इस प्रकार बढ़ता गया कि अनेक राजवंश पूरी तरह से नष्ट हो गए
- **कर्मचारियों का असंतोष** -अंग्रेजो ने रियासतों पर कब्ज़ा करके अनेक कर्मचारियों की आजीविका बंद कर दी
- **मुग़ल सम्राट का अपमान -बहादुर शाह दिल्ली** का शासक था, जनता उनका सम्मान करती थी लेकिन अंग्रेजो ने उनका अपमान किया तो जनता की घृणा उनके प्रति बढ़ती गयी
- **अवध के नबाब का अपमान** -अंग्रेजो ने **नबाब वाजिद अली** शाह को निर्वासित करके उसके महल को लूट लिया और **बेगमो** का अपमान किया

- **जागीरो को छीनना** - अंग्रेजो ने नबाब के अधीन बड़े बड़े **जागीरदारों** की जागीर छीन ली और किसानो को बहुत परेशान किया
- **उत्तराधिकार निषेध अधिनियम** - **डलहौजी** की **हड़प नीति** से अनेक शासक असंतुष्ट हुए और अंततः जब अवध को **कुशासन** के आरोप में अंग्रेजी राज्य में मिलाया गया। तो असंतोष तीव्र हुआ।
- झाँसी की **रानी लक्ष्मी बाई** एवं **पेशवा** का दत्तक पुत्र **नाना साहब अंग्रेजो** के व्यवहार से विरोधी बन गए
- **अंग्रेजो की कूटनीति** -अंग्रेजो की कूटनीति यह थी कि भारत में एक भी **राजवंश** नहीं रहने दिया जाएगा इस नीति से अनेक लोग अंग्रेज विरोधी बन गए
- ब्रिटिश शासन की **विदेशी प्रकृति** ने भारतीयों को असंतुष्ट कर दिया। वस्तुतः अंग्रेज भारत में सदैव विदेशी रहे और जातीय श्रेष्ठता के नशे में चूर रहे, जो भारतीयों असंतोष का कारण बना।

आर्थिक कारण

- ब्रिटिश आर्थिक नीति ने भारतीयों अर्थव्यवस्था के **परंपरागत ढांचे का विनाश** कर दिया। अतः **कृषि उद्योग** एवं **गांवों** पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- अधिकतम लगान राशि के कारण **किसानों का निर्धनीकरण** हुआ।
- **हस्तशिल्प उद्योगों** का पतन हुआ। **नगदी फसलों** की बाध्यकारी कृषि से खाद्यान्न की कमी हुई। **अकाल** की बर्बरता बढी। अतः जन असंतोष बढा।

सामाजिक-सांस्कृतिक कारण

भारतीयों संस्कृति को निम्न बताकर **ईसाईं करण** पर बल ।

- कानूनों के माध्यम से भारतीयों के सामाजिक धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप - जैसे **सती प्रथा निरोधक कानून**, **धार्मिक अयोग्यता** अधिनियम, **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम** बनाया।
- 1850 में एक अधिनियम ने विरासत के **हिंदू कानून** को बदल दिया, जिससे एक हिंदू जो **ईसाई धर्म** में परिवर्तित हो गया, को अपनी **पैतृक संपत्तियों** का **उत्तराधिकारी** बना दिया।
- **ईसाई मिशनरियों** की बढ़ती गतिविधियों को संदेह और **अविश्वास** की दृष्टि से देखा गया।

सैन्य कारण

अंग्रेज सिपाहियों की तुलना में **कम वेतन** तथा **पदोन्नति** में **भेदभाव**

- भारतीय सिपाही कभी **सूबेदार** के **पद** से ऊपर **नहीं** उठ सकता था।
- सिपाहियों को जातीय **धार्मिक पहचान** संबंधित **चिन्हों** को धारण करने से रोका गया।
- तत्काल कारण: **गाय** और **सुअर** की **चर्बी** वाले कारतूस का उपयोग।
- सिपाहियों को अतिरिक्त भत्ते के भुगतान के बिना अपने घरों से दूर **विदेशो** में सेवा देने जाना पड़ता था
- सैन्य असंतोष का एक महत्वपूर्ण कारण **सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम**, **1856** था, जिसने सिपाहियों के लिए जब भी आवश्यक हो, **समुद्र पार** करना अनिवार्य कर दिया था।
- हिंदू मानते थे कि **समुद्र पार** करने से वे अपनी **जाति खो** देंगे।

बाहरी घटनाओं का प्रभाव

बाहरी घटनाओं जैसे - **अफगान युद्ध** (1838-42), **पंजाब युद्ध** (1845-49), और **क्रीमियन युद्ध** (1854-56) आदि से स्पष्ट हो गया की अंग्रेज **अजेय नही** है।

तात्कालिक कारण

विद्रोह का **तात्कालिक** कारण **चर्बी** वाले **कारतूस** के प्रयोग का मुद्दा था।

- वस्तुतः **दमदम** सैन्य छावनी से पहली बार इस कारतूस के प्रयोग की सूचना भारतीयों को मिली।
- इससे भारतीयों सैनिकों को यह लगा कि ब्रिटिश जानबूझकर उनके **धर्म** को **भ्रष्टकर** रहे हैं।